आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 17 | उदयपुर रविवार 15 सितम्बर 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

श्राद्ध में बालिकाओं का सांजी चितरावण

-डॉ. कहानी भानावत-

राजस्थान में बालिकाओं के जो विविध उत्सव एवं अनुष्ठान प्रचलित हैं उनमें श्राद्ध पक्ष में प्रतिदिन घर के मुख्य द्वार पर बनाई जाने वाली संझ्या अथवा सांझी कला का विशेष महत्व है। यह सांझी एक देवी के रूप में समपूजित है। प्रतिदिन संध्या को गोबर की विविध आकृतियों में बालिकाएं अपनी मां-बहिनों के सहयोग से तिथि के अनुसार उससे मिलते जुलते अंकन उभारती हैं और उन्हें नाना प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों से सजाकर सांझी को सौंदर्यपूरित श्रद्धा अर्पित करती हैं।

श्राद्ध में हमारे यहां पितरों अथवा पूर्वजों को तिथि अनुसार स्मरण करने की परंपरा रही है। इसे विचित्र संयोग ही कहा जायेगा कि सांझी कैसे लड़कियों में पूर्वज के प्रतीक रूप में लोकप्रिय हो गई और हिन्दू जाति की समस्त छत्तीसी कोमों में इसका मंडनांकन प्रचलित हुआ। ऐसी अनोखी, अद्‌भुत और अनमोल परंपरा शायद ही कहीं अन्यत्र देखने को मिलती है।

राजस्थान में अनेक लोकदेवी-देवता मान्य हैं जो अपने विविध गुणों एवं अद्‌भुत कार्यों के लिए अपने जीवन को न्यौछावर करने के कारण पूजित हैं किंतु सांझी के साथ ऐसी कोई घटना नहीं मिलती है। हां, बगड़ावत लोकगाथा में 24 रणबांकुरे भाइयों का उल्लेख मिलता है। यह गाथा अजमेर के राजा बीसलदेव चौहान से जुड़ी है। उनके भाई मांडलजी के पुत्र हरीजी के बाघजी नामक एक ऐसी भीमकाय संतान हुई जिसका मुंह शेर का तथा धड़ मनुष्य का था।

ऐसे विचित्रकाय व्यक्ति को अलग बाग में शरण दे उसकी सेवा के लिए एक लंगड़ा (खोड्या) ब्राह्मण नियुक्त कर दिया। सावन के माह में परंपरानुसार सभी लड़कियां खेलने के लिए बाग में उपस्थित हुईं। ज्योतिष विद्या में प्रवीण ब्राह्मण के परामर्श से बाघजी ने अपनी भुजाओं में तेरह लड़कियां समेट लीं। उनमें से एक सबसे सुंदर सांझी नामक लड़की बाघजी ने ब्राह्मण खोड्या को दे दी और शेष बारह लड़कियों के साथ विवाह कर लिया। कालांतर में उनसे दो-दो पुत्ररत्न हुए जो 24 बगड़ावत के रूप में ख्यात हुए।

पहलीबार इसका उल्लेख करते डॉ. महेंद्र भानावत ने सांझी मंडन की प्रमुख नायिका संज्या अथवा सांझी को खोज निकाला। यही सांझी कब किस तरह लड़कियों में सर्वाधिक लोकप्रिय बनकर धीरे-धीरे उनमें पूजित और प्रतिष्ठित होती हुई पूरे राजस्थान में श्राद्ध पक्ष में प्रतिष्ठा अर्जित करते हुए सदा-सदा के लिए स्मरणीय बन गई। यह जितनी अचरज भरी कहानी है उतनी ही विस्मयकारी अकल्पनिक और शोधपूर्ण है। राजा बीसलदेव चौहान का समय सन् 1153 से लेकर 1163 तक का रहा।

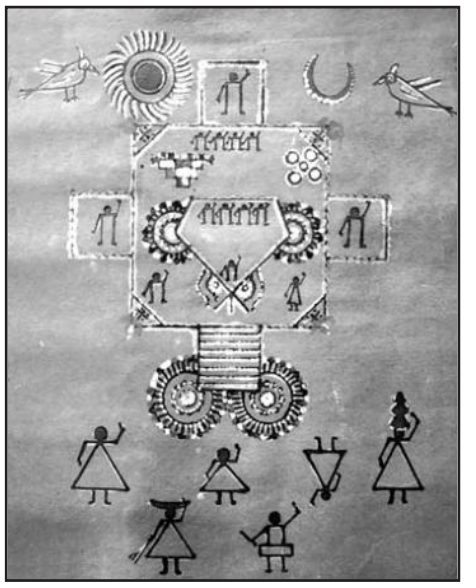

बारहवीं शताब्दी से लेकर अब तक पूर्व घटित यह दास्तान कैसे अधिकाधिक लोकप्रियता प्राप्त कर सर्वचर्चित होती न केवल पूरे राजस्थान में अपितु आगे जाकर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश आदि प्रांतों में अपना फैलाव देती हुई नेपाल तक पहुंच गई। इसके विविध नामों में सांजी, संजुल, गुलाबाई, धूंधा, सांझीफूली नाम मिलते हैं। सच तो यह है कि सांझी ही है जो गोबर को फूलों से सजाकर उसे गोबरफूली बनाती है।

सांझी के विविध अंकनों में सांझी और उससे जुड़े हम सबके मानव जीवनचक्र को प्रभावित करने वाले चांद, सूरज, तारे, फूल, छाबड़ी, चौपड़, नगाड़े की जोड़, तीन तिबारी, चरती-भरती खेल, बीजणी, बिजोरा, घेवर, सातिया, सप्तऋषि, अष्ट पंखूड़ी फूल, कुंवारे-कुंवारी, पंखी, केले का पेड़, गाड़ी, घट्टी, जलेबी, छड़ी, बंदरवाल, डोली, पान-सुपारी, नाव, बेलन, पछेटे, ढाल, तलवार, थाली-कटोरा, छाछ-बिलौना, निसरनी, खजूर, डोकरा-डोकरी, गिरिराज पर्वत, मोर-मोरनी, जनेऊ, पत्तल-दोने, हाथी की सवारी जैसे अनेकानेक अंकन उभारे जाने लगे।

इन अंकनों में बालिकाओं की इच्छा अनुरूप स्थानीयता को प्रभावित करने वाले और अंकन भी जुड़ते रहते हैं। इन्हें सजाने के लिए उस अंचल विशेष में उपलब्ध अनूठे रूप में सिणगारने में कोई कसर बाकी नहीं रखती है। संझ्या पूर्ण करने पर अनुष्ठान रूप में उसकी आरती की जाती है और दूध, कूलर का छिड़काव किया जाता है।

उल्लेखनीय पक्ष यह है कि संझ्या मंडन के समय पूर्णत: स्वच्छ वातावरण और पवित्र परिवेश का ध्यान रखा जाता है। गोबर-मिट्टी की गोहली दी जाती है। कुंवारी केरड़ी अर्थात् गाय की बछिया का गोबर काम में लिया जाता है। जो फूल एकत्र किये जाते हैं वे तोड़े नहीं जाकर बड़े अदब से चूंट कर लाये जाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि देवता की पूजा अर्चना के समय जितनी पवित्रता, स्वच्छता, तन शुद्धि और मन निर्मलता रखी जाती है उतनी ही सावधानी संझ्या चितरावण के समय रखी जाती है।

श्राद्ध पक्ष में अंतिम तीन दिन संझ्या की छोटी-छोटी आकृतियां नहीं बनाई जाकर एक बड़ा सा कोट बनाया जाता है। यह कोट जैसे शहर के चारों ओर का परकोटा होता है उसी तरह अपेक्षाकृत बड़ी और मोटी गोबर से बनी दीवारनुमा होता है।

इसमें ऊपर ही ऊपर चांद-सूरज और दोनों ओर तोते तथा कौवे, भीतर बीच में पनवाड़ी, जोगियों की जमात, गाड़ी चलाता कोचवान तथा मुख्यत: रथ-गाड़ी होती है जिसमें संझ्या की विदाई दिखाई जाती है। यों कोट में छोटी-छोटी वे सारी प्रमुख चीजें होती हैं जो प्रतिदिन की संझ्या में चितराई जाती हैं। कोट के बाहर नीचे की ओर जाड़ी जसोदा, पतली पेमा, गुजरणी, खापर्‌या चोर, हरिजनी तथा ढोली और मालन दिखाये जाते हैं। ये सब कारू कहलाते हैं जिनका प्रवेश कोट के भीतर नहीं रहता है।

खापर्‌या चोर की टांगें ऊपर उठी हुई और सिर नीचे, गुजरणी के सिर पर दूध-दही से भरी एक के ऊपर एक चूड़ी उतार मटकियां अर्थात् जावणियां होती हैं। हरिजनी के हाथ में झाड़ू के प्रतीक के रूप में दो-तीन सीकें तथा टोकरी रहती है।

- शेष पृष्ठ सात पर

संझ्या संबंधी हमारे प्रयास

राजस्थान, मुख्यत: मेवाड़ के ऐसे कई महत्वपूर्ण लोक-कला-रूप हैं जिन्हें आजादी के बाद अस्त होते पुनर्जीवन दिया। पुनर्जीवन ही नहीं, अपितु उन्हें विश्व-ख्याति तक मिली, चाहे बदलते सन्दर्भ में समय के पछाट से उनका वह स्वरूप नहीं रहा हो। इनमें पड़कला, भीलों में प्रचलित गवरी नृत्यानुष्ठान कठपुतली, बालिकाओं में प्रचलित सांझी तथा कावड़ कला को लिया जा सकता है।

श्राद्ध पक्ष पर निर्मित राजस्थानी कुमारिकाओं की संझ्या गुड़गुड़ गुड़ल्यो गुड़ तो जाय शीर्षक से डॉ. महेन्द्र भानावत ने पहली बार धर्मयुग साप्ताहिक में 25 सितम्बर 1960 के अंक में सचित्र आलेख लिखा था। उसके बाद देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होते रहे। इसी क्रम में ठीक 50 वर्ष बाद 25 सितम्बर 2015 को उज्जैन में वहां की प्रतिकल्पा संस्था की पल्लवी द्वारा सांझी पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा के प्रयत्नों से आयोजित हुई जिसमें बालकवि बैरागी, डॉ. पूरन सहगल के साथ डॉ. महेन्द्र भानावत ने भाग लिया और सांझी पर उनके द्वारा किये गए प्रयत्नों को संगोष्ठी में आश्चर्यजनक सराहना मिली।

इस बीच 1977 में डॉ. भानावत द्वारा लिखित 'राजस्थान की संझ्या' नामक पुस्तक का प्रकाशन भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर से हुआ। यहीं से इसका द्वितीय संस्करण 2017 में राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर ने किया। इसी क्रम में डॉ. भानावत की आत्मजा कहानी भानावत ने राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से राजस्थान की सांझी कला पर शोधप्रबन्ध लिख पीएच.डी. की उपाधि ली और बाद में उसका संक्षिप्त रूप राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने प्रकाशित किया।

डॉ. भानावत ने बताया कि विगत तीन-चार दशक में देखते-देखते सांझी मंडन लुप्त-सा होता गया। अब वैसा उत्साह कहीं देखने को नहीं मिलता तब भी इक्की-दुक्की कुछेक संस्थाएं हैं जो अपनी पुरातन विरासत के संरक्षण के लिए कभी-कभी होश में आ जाती हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि उदयपुर के पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने इस श्राद्ध पक्ष में अपने विश्व प्रसिद्ध शिल्पग्राम में 16 से 20 सितम्बर तक वहां की 25 फीट ऊंची और इतनी ही लम्बी दीवार पर संझ्या के विविध रूपों का मंडन प्रदर्शित किया। यह चितरावण सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. दीपिका माली द्वारा तैयार किया गया। **- संपादक**

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 सितम्बर 2019

सम्पादकीय

आदिम नृत्यानुष्ठान गवरी का बहता पानी निर्मला

इसे विचित्र संयोग ही कहा जायेगा कि वीर भूमि मेवाड़ की अनेक वीरासतों की लोकरंजनी परंपराएं अब भी बिना किसी छेड़छाड़ के जीवंत बनी बहता पानी निर्मला के रूप में दृष्टिगत हैं। यह भूमि आदिवासी जीवनधारा की आदिम सृष्टि का गोड़-बीज भी रखती है और जो गाथाएं कंठासीन बनी हुई हैं उनमें वर्णन व्याप्त है कि यहीं से सबसे पहले सातवें पिंयाल, पाताल से बड़ी मन्नतों से देवी-शक्तियां राजा वासुकि के दरबार से पहला पर्यावरण जीवनदाता बड़ल्या, बड़-बरगद वृक्ष लाईं और चट्टान पर प्रतिष्ठित कर दूध-दही द्वारा उसका लालन-पालन-पोषण किया।

तब उसके विशालकाय एक-एक पत्ते पर सिंदूरी डबडबी आंखें थीं और जड़ें लटककर पुनः धरती के गर्भ में समाकर फिर वृक्ष का रूप लेती रहीं। इस प्रकार वह बड़ आगे-से-आगे बिना अपना अस्तित्व विलीन किये सृष्टि-कर्म-कर्म का उद्गाथा बनता आज भी अपना दरसाव देता हल्दीघाटी के पास खमनौर गांव में चेतनवत है।

पता नहीं कबसे न जाने कितने घटना-किस्सों को अपने साथ किये आदिवासियों की यह समृद्ध धरोहर उनके जीवन का अनिवार्य अंगीरस बनी हुई है जिसकी उन्हें भी कोई खबर और अतापता नहीं है पर वे असीम निष्ठा, अटूट श्रद्धा, अभिन्न विश्वास और समर्पण साधनामय तपःपूत निष्ठा से उसे रसमग्न किये हैं।

जो गवरी प्रारंभ में आराधनामूलक नाच से शुरू हुई वह अब मात्र नृत्य नहीं है। एक पूरा का पूरा अभिनीत रूपांकन बन अनेक कथासूत्रों, संवादों, कथा-गल्पों, प्रहसनों, स्वांगों, लीला दृश्यों तथा हास-परिहासजनित दर्शकों से सीधा मेलमिलाप करता मेला-रेला ही लगता है।

रक्षाबंधन के दूसरे दिन ठंडी राखी से प्रारंभ यह दृश्य-दर्शन भील परिवार से जुड़े उन समस्त चोखलों, गांवों, टेकरियों को स्पर्शित करता एक जगह से दूसरी जगह पड़ाव देता सुबह से संध्या तक प्रत्येक राहगीर को रमणानंद देता चालीस दिन का शुभ मुहूर्त देता देवी गौरजा, पार्वती माता का सान्निध्य पाता है। पुराणों में भी इसकी कथा का बीजारोपण मिलता है।

जो भी है, डॉ. महेन्द्र भानावत ने इसे पहलीबार 1965 में अपने शोध का विषय बनाया। पहलीबार सुखाड़िया विश्वविद्यालय में रजिस्ट्रेशन कराया और पहलीबार के 1968 में हुए दीक्षांत समारोह में पीएच.डी. की उपाधि ली तब से गवरी को संजीवन बनाये रखना जारी है कारण कि तब ही जब गांवों में आजादी की विकासधारा चली तब यह कहा गया कि विकास करना है तो परंपरागत जीवन पद्धति का त्याग करना पड़ेगा।

यह आंदोलन के रूप में अभियान चला। तब छपे हुए परचे बांटे गए और ऐसे नृत्यानुष्ठान नहीं छोड़ने पर दंड की व्यवस्था के साथ जाति से बहिष्कार करने का फरमान जारी किया गया। डॉ. भानावत के पास तब का 10 सितंबर 1965 का छपा परचा सुरक्षित है जो इस प्रकार है-

गिरवा गमेती भाइयों से निवदेन

गांव गिरवा के गमेती भाइयों! आपको यह तो मालूम ही था कि जिस समय आयड़ गांव के गंगू पर गमेती जाति की बैठक रखी थी, उसमें गिरवा व अन्य गमेती भाइयों ने तय किया कि कांग्रेस सरकार हमारे सामाजिक जीवन को तन, मन, धन द्वारा ऊंचा उठा रही है और हर तरह से हमारी सहायता व मदद कर रही है पर हम लोग अभी गहरी नींद में सोये हुए हैं। न हमें अभी तक अच्छा जीवन बिताने का ढंग मालूम है।

हमारे दिमागों में प्राचीन बुद्धि पड़ी हुई है और हमारा सारा समय यों ही बीत जाता है। इस बात को सरकार ने ध्यान में रखकर हमारी भलाई के लिए गवरी नृत्य बंद कर दिया, इसकी हमें खुशी है। क्योंकि हम महीने भर इधर-उधर मारे-मारे न फिरकर एक जगह बैठकर हमेशा के काम में लगे रहें।

इस विषय पर समस्त गमेती भाइयों ने ही बैठक बिठा कर यह तय किया कि गवरी नहीं लेंगे पर पंचों की बिना आज्ञा से गोर्द्धन विलास वाली देवाली में गमेती भाइयों ने गवरी ली। यह हमारी गमेती जाति के लिए शर्म की बात है। हम गिरवा गांव के समस्त गमेती भाई सभी भाइयों से यह प्रार्थना करते हैं कि इस बात को ध्यान में रखते हुए उनका जाति-व्यवहार, लेन-देन, साड़ी-कपड़ा, पहरावणी आदि बंद किये जाएं।

अगर कोई जाति भाई पहरावणी व लेन-देन करता हुआ हमारी नजर में या दूसरों की नजर में दिखाई दिया तो उस पर 500 रूपया जुर्माना और 12 वर्ष तक उसका जाति व्यवहार बंद रहेगा।

विनीत
समस्त पंच गिरवा

दिनांक : 10-9-1965

डॉ. भानावत ने बताया कि चौथी में पढ़ते जब वे बुखार-ग्रस्त हो गये तब गांव में इलाज नहीं था। महिलाओं ने राय दी कि रावले में राई (गवरी) नाच रही है वहां ले जाया जाय तब उनकी मां उन्हें ले गई और अंतिम खेल शेर के नीचे से उन्हें निकाला गया तब घर जाते-जाते वे स्वस्थ हो गए और उसके बाद सात दशक हो गए उन्होंने बुखार नहीं देखा।

अब तो गवरी को सभी कोई अपना रहे हैं, देख रहे हैं, सरकार भी उन्हें संरक्षण देती उनके जगह-जगह प्रदर्शन दिलवा रही है। गवरी जो तब मरूं-मरूं की स्थिति में चड़क-चूं बनी हुई थी अब कई रूपों में अध्ययन का आधार बनी है। लोग उस पर शोध भी कर रहे हैं और पुस्तकें भी लिख रहे हैं। स्वयं डॉ. भानावत ने कई पुस्तकों में, पत्र-पत्रिकाओं में इसे लिखा है और स्वतंत्र पुस्तकें भी दी हैं।

जय गवरी की। जय आदिवासी
जीवनधारा की।

उदयपुर स्मार्ट सिटी को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव

लेकसिटी उदयपुर को स्मार्ट सिटी बनाने के लिए किए जा रहे सार्थक प्रयासों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहा जाने का गौरव प्राप्त हुआ है फलस्वरूप इसे अन्तर्राष्ट्रीय 'सस्टेनेबल सिटीज़ एण्ड हयूमन सेटलमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया है। उदयपुर स्मार्ट सिटी सीईओ कमर चौधरी ने बताया कि इस अवार्ड के माध्यम से जिला कलक्टर श्रीमती आनंदी के निर्देशन में लेकसिटी को स्मार्ट सिटी बनाने के उद्देश्य से तैयार किए गए महत्त्वकांक्षी प्रोजेक्ट को मूर्त रूप देने के पीछे स्मार्ट बिल्डींग ऑपरेशन के लिए तैयार किए गए कमांड और कंट्रोल सेंटर, कचरा निस्तारण, डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण, व्हीकल ट्रेकिंग सिस्टम, शुद्ध पेयजल आपूर्ति के लिए तैयार

किए जा रहे सिस्टम, वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट प्लान के साथ जलसंग्रहण के लिए किए जा रहे प्रयास हैं।

शब्द शिखर डॉ. जगमलसिंह से अभूतपूर्व उमड़ाव

अपने सृजन कर्म की पैठ दिये अनेक पुरस्कारों-सम्मानों के धनी

प्रो. जगमलसिंह का विशिष्ट योगदान मणिपुर, असम तथा उत्तरपूर्वी पर्वतीय के विश्वविद्यालयों में हिन्दी प्राध्यापन के रूप में प्रसिद्धि लिये है। ब्यावर निवासी प्रो. जगमलसिंह ने 13 सितम्बर को शब्द रंजन कार्यालय में डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की। पिछले छह दशक से दोनों घनिष्ट मित्र हैं।

डॉ. भानावत ने बताया कि यह भेंट उनकी 50 वर्ष बाद हुई। असीम आनन्द की अनुभूति लिए दोनों ने घर-परिवार से लेकर साहित्य, संस्कृति, शिक्षा तथा लेखन कर्म की अनेक जानकारियों का समृद्ध आदान-प्रदान किया। दोनों ने एक-दूसरे को अपने द्वारा लिखित साहित्य भेंट किया। इस बीच डॉ. देव कोठारी भी इस मिलन मैत्री के उल्लेखनीय हिस्से बने रहे जो दोनों से पुरानी मैत्री संपर्क लिये हैं।

के. सी. मालू को इंडिक एकेडमी अवार्ड

नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में कलाविज्ञ के. सी. मालू को इंडिक एकेडमी अवार्ड से सम्मानित किया गया। श्री मालू ने भारतीय कला व संस्कृति की धरोहरों के संरक्षण के साथ-साथ सनातन धर्म, संगीत, फाइन आर्ट एवं भारतीय संस्कृति के विकास के लिए अतुलनीय योगदान दिया। साथ ही राजस्थान के लोकगीत व संगीत एवं नृत्य को विश्वभर में लोकपिय बनाने तथा इनके संरक्षण, शोध एवं विकास के लिए बेजोड़ सेवाएं दीं।

मालू ने लोक उपक्रम राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल एवं प्रधानमंत्री कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों से भेंट कर राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करवाने में सहयोग का आग्रह किया।

-नीति 'गोपेन्द्र' भट्ट

संदर्भ समीक्षा द्वारा सम्मान एवं लोकार्पण

भीलवाड़ा की संदर्भ समीक्षा समिति द्वारा डॉ. बलराम अग्रवाल, डॉ. अनिलकुमारसिंह गहलोत, माधव नागदा, गिरिराजधरणसिंह सिसोदिया,

विट्ठल पारीक तथा विनोदसिंह नामदेव शजर को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर रेखा लोढ़ा 'स्मित' की सजल संग्रह 'रोशनी है दांव पर' तथा कहानी संग्रह 'मुट्ठी भर आकाश' एवं प्रहलाद पारीक की 'जीवन की हलचल कह दूं' पुस्तक लोकार्पित की गई।

-वीरेंद्रकुमार लोढ़ा

स्मृतियों के शिखर (84) : डॉ. महेन्द्र भानावत

संत से शतगुणे बसन्त निरगुणे

श्री बसंत निरगुणे एक संवेदनशील तथा सतत कर्मशील लोकचिंतक हैं। उनसे पहलीबार मैं कब मिला, यह महत्वपूर्ण नहीं है पर तब से लेकर अब तक हमारी मैत्री अखंड बनी अविराम, अभिराम है, यह महत्वपूर्ण है और यह भी कि यह मैत्री स्वर्णिका के नजदीक पहुंचने वाली है। मालवा से जुड़े निमाड़ अंचल के रहवासी निरगुणेजी का पूरा चित्त निमाड़ी लोकरंग की विविधरंगी भांतों की बुनावट लिये है जो हर सफल और संजीदा लेखक का होता है। वह कहीं रहे, कहीं अपनी कर्मभूमि बनाये किंतु उसका बड़ा मन अपनी जन्मभूमि और जन्मांचल में लोटपोट रहता है।

मुझे लिखे कई पत्र उनकी इस धारणा-पारणा के साक्षी हैं। एक पत्र में तो उन्होंने बहुत ही स्पष्टतापूर्वक मुझे लिख भेजा-

''निमाड़ी लोककथाएं आपके लोक-आनंद के लिए भेज रहा हूं। मेरी पहली प्रतिबद्धता निमाड़ी संस्कृति, साहित्य और कला के संरक्षण तथा विस्तार की है। इसीलिए मेरा ध्यान निमाड़ी की वाचिक परंपरा के संकलन की ओर केन्द्रित है। निमाड़ी लोकोक्तियों पर काम पूरा हो गया है।

निमाड़ी के एक हजार लोकगीतों का संकलन तैयार कर रहा हूं। मेरा संकल्प है कि श्रद्धेय श्री रामनारायणजी उपाध्याय से आगे का काम करूं। जिस मिट्टी का मैंने अन्न-जल ग्रहण किया है उसके प्रति भी कुछ कर्ज चुकाना है ही। फिर अपने समय को भी जवाब देना पड़ेगा। इन दिनों निमाड़ी और निमाड़ी संस्कृति की बातें ही मेरी स्मृति का हिस्सा हो गई हैं। यह होना ही चाहिये। जो जहां का होता है वहां का लोक व्यक्ति को केवल लपेटता ही नहीं, बल्कि वह उसके भीतर बसा होता है।''

मेरी दृष्टि में ऐसी भावना और मनोभावना एक लेखक की नहीं, हर उस संज्ञानी की होती है जो सचमुच में अपना जीवन सार्थक करना चाहता है। जीते जी तो व्यक्ति अपनी जन्मभूमि के लिए करता ही है, मरने के बाद भी उसी भूमि में अपने को श्मशानी तथा रमणशील कर देना चाहता है।

इसे संयोग कहिये कि भारतीय लोककला मंडल से मेरे संपादन में मासिक 'रंगायन' पत्र के लिए जब उनसे मैंने आलेख चाहा तो पहला लेख ही उन्होंने मुझे निमाड़ पर लिख भेजा जिसे जुलाई 1975 के अंक में 'निमाड़ के भाग : जिरोती और नाग' शीर्षक से प्रकाशित किया।

यही क्यों, 1977 में कलामंडल का रजत जयंती महोत्सव मनाया गया और मैंने 'रजन्तिका' नाम से एक स्मारिका का संपादन किया तब भी उन्होंने जो लेख भेजा वह भी 'मालव-निमाड़ की भित्ति चित्र परंपरा' का ही था।

कारण यही ठीक ही था कि मालव और निमाड़ जनपद एक ही बंधी मुट्ठी के जनपद हैं। डॉ. शिवमंगल 'सुमन' ने तो कहा भी कि जैसे बिना रस के रूप व्यर्थ है वैसे ही बिना निमाड़ के मालवा अधूरा है। डॉ. श्याम परमार ने इसी बात को इस अंदाज में लिखा- 'निमाड़ और मालवा तो भाई-भाई हैं। सुबह के बिस्तर में जैसे दो छोटे भाई एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर पड़े रहते हैं उसी प्रकार इन दोनों भू भागों की सीमाएं मिलती हैं।'

याद आ रहा है इन्दौर का 1973 का निमाड़ी-मालवी लोकोत्सव जिसमें चार-पांच दिन छककर प्रति रात्रि जहां निमाड़ और मालवा के विविध तथा एक से एक अनुपम लोकनृत्यों के इन्द्रधनुषी रूप तथा रसानंद का उमड़ाव देखा वहीं दिन को उन्हीं ललित-लावण्यमय छटाओं से जुड़ी समृद्ध परंपराओं पर आपसी संवाद, वार्ता, मेलमिलाप तथा चर्चा परिचर्चाओं के साथ विद्वानों का मैत्री-सत्संग अविस्मरणीय बना। यहीं पहलीबार डॉ. श्याम परमार और डॉ. शरद पगारेजी से सौहार्द्र पनपा जो सदैव सवाया ही होता रहा।

यहीं पता चला कि इस लोकोत्सव की ओट में बसंत निरगुणे एक संत की तरह निर्गुणे नहीं बल्कि शत-सहस्त्र गुणे बनकर लमछराये हैं। हमारी मैत्री का पुण्य प्रतापी वट-बीज यहीं घनिष्टता से उद्घाटित हुआ जिसकी जड़ेलियों का सींचन आज भी उतनी ही हरीतिमा लिये हरिहर बना हुआ है। इस लोकोत्सव की देखादेख हमने भी लोककला मंडल में 'लोकानुरंजन समारोह' का आयोजन कर अखिल भारतीय सुयश स्थापित किया।

पत्रों के सिलसिले के साथ-साथ हमारे आपसी मंतव्यों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशनों तथा अपनी लिखी पुस्तकों का आदान-प्रदान भी हमारे मैत्री-संबंधों के व्यावहारिक आधार को मजबूती देने में निरन्तर सक्रिय बना रहा। जब मैंने अपनी कविता पुस्तक 'कोई-कोई औरत' उन्हें भेजी तो उनकी मेरी कविताई को लेकर गहरी सहानुभूताई की चिट्ठी मिली।

यह पत्र 22 नवम्बर 1980 का उनके निवास काव्यकुटी, 2, शंकरगंज, इन्दौर-452002 का लिखा मिला। इस पत्र से लगा कि उन्होंने मेरी कविताओं को बड़ी गहराई से पढ़ा और उसी गहन अनुभूति से समीक्षात्मक टीप भी मुझे लिख भेजी है-

'लोक परम्परा से हटकर इस कृति में आप अलग ही पहचान लेकर उतरे हैं। लोकविधाओं में प्रख्यात आपकी कलम बड़ी धमक से कविता के क्षेत्र में उतरी है। धमक से इसलिए कि आप कविता से कभी कटे नहीं रहे बल्कि खुली आंखों से कविताई आंदोलनों को देखते रहे। कविता का दृष्टा होना भी बड़ी बात है। यह तथ्य बिल्कुल सही है कि किसी साहित्यकार की शुरूआत कविता से होती है। इससे आप अछूते नहीं हैं।'

इसी पत्र में आगे लिखा- 'कोई-कोई औरत' का रचनाकार कोई नया सिक्कड़ कवि नहीं है। वह इतिहास में रचा-पचा कवि है। साफ सुथरा, बेवाक, बेखौफ तरीके से बात करने, कहने, सहने की जिसकी आदत है इसलिए यह रूप कविता में सहज आ गया है। ये कविताएं सायास द्रविड़ प्राणायाम नहीं लगतीं बल्कि जानबूझ कर संजीदा तरीके से, सलीके से व्यवहार करती हैं। कविवर बच्चन की एक बात मुझे याद आती है-

'कविता से / तुम रोटी नहीं पाओगे / परन्तु / रोटी सलीके से खाओगे /'

आपने अपनी रोटी को सलीके से खाया है। कहना नहीं होगा कि भाषा को लोक के वजनी और गहराई तक उतरने वाले शब्दों से न केवल ताजगी मिली है बल्कि कविता लोक से कहीं हटी नहीं है जो डॉ. भानावत का लोक है।'

भोपाल स्थित मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद से जुड़कर बसंतजी ने स्थायीत्व पाया और सर्वथा एक नई दृष्टि एवं गहरी पकड़ के साथ जनजातीय जीवनधर्मिता की पैठ खंगाली। यहां के प्रकाशक, अधिकारी और फिर सर्वेक्षण अधिकारी के पद पर रहते उन्होंने पूरे प्रदेश को अपना कार्यस्थल बनाया। परिषद के माध्यम से निरंतर संगोष्ठियां, समारोह और कार्यशालाओं का आयोजन कर प्रांत और प्रांतेतर लोकसाहित्य-संस्कृतिवेत्ताओं को आमंत्रित किया।

यहीं से प्रकाशित 'चौमासा' पत्रिका से भी उन्होंने विविध क्षेत्रीय लेखकों से अपना पारिवारिक संबंध बनाया। जनजातीय तथा इतर लोकव्यापी संस्कृतियों के आदान-प्रदान से शोध के कई गवाक्ष खुले। इससे विश्वविद्यालयों में पठन-पाठन के पाठ्यक्रम प्रारंभ हुए। विद्वानों, रसिकों तथा गुणीज्ञों के मेलमिलाप से अन्तर्प्रांतीय लोकसांस्कृतिक बंधुत्व की नींव को नव्य-भव्य रूपांकन मिला। निरगुणेजी से सांठी-लांठी मैत्री का यह लाभ मुझे भी मिला। कई बार हमारा उनके आयोजन के अलावा अन्यत्र हुए आयोजनों में भी धमाकेदार मिलना हुआ।

एकबार उन्होंने मुझे परिषद से प्रकाशित चौमासा के पिछले पांच अंकों के साथ नया अंक भेजा जिसमें उनका गोदनों पर आलेख था। इस पर उन्होंने मुझसे विस्तृत प्रतिक्रिया भी चाही थी। मैंने भी उनको रंगायन के पांच अंक तथा तीन पुस्तकें भेजीं। यही नहीं, भोपाल में आयोजित एक समारोह में मैंने इधर आदिवासी भीलों के आनुष्ठानिक नृत्यनाट्य गवरी नचाने वालों का दल भी भेजा जो सब ओर से प्रशंसित रहा।

बसंतजी ने 18 जनवरी 1972 के पत्र में मुझे लिखा भी कि पहलीबार गवरी लोकनाट्य को आंखों से देखने का अवसर अत्यंत आह्लादकारी रहा। राज्यपाल ने सभी कलाकारों को चाय-पान पर बुलाया था, वहां भी गवरी का प्रदर्शन सुंदर रहा। कभी परिषद की ओर से भी मैं गवरी को बुलाऊंगा।

एक अन्य 22 जुलाई 1992 के पत्र में उन्होंने चौमासा के लिए लोकाभूषणों पर केन्द्रित लेख चाहा था। जब मैंने इस विषयक लेख भेजा तो उन्होंने लिखा- 'मीठा-मीठा मिश्री सा आपका पत्र मिला। मैं राजस्थान को रेत का नहीं, कलाओं का भी साम्राज्य मानता हूं। सांस्कृतिक परिदृश्य में राजस्थान की लोककलाओं और ललितकलाओं का जो वैभव है, वह हमारे लिये क्या, सबके लिए गौरव की बात है। हर क्षेत्र में अगवा तो रंगीला राजस्थान है।'

निरगुणेजी चौमासा के साथ-साथ उसके साथ प्रकाशित पुस्तिका भी भेजते रहे। एकबार मैंने उन्हें मीरां के लोक में प्रचलित पदों पर संकलन निकालने को लिखा।

मेरा पत्र पहुंचते ही उन्होंने लिखा- 'आप परिषद के शुभचिंतक हैं। यहां के प्रकाशकों के प्रशंसक भी। आपका यही आत्मीय सक्रिय सहयोग हमारे कार्यों का बल है। हम आपके द्वारा संकलित मीरां के लोकपदों की पांडुलिपि की प्रतीक्षा कर रहे हैं।' यह कार्य बड़ा श्रमसाध्य था जिसके लिए परिषद का वांछित सहयोग जरूरी था किंतु परिषद ने मेरी दो पुस्तकें 'पाबूजी की पड़' तथा 'पांडवों का भारत' छाप कर मेरा बहुमान ही बढ़ाया।

कलामंडल से प्रकाशित रंगायन के अलावा मैंने अन्य और पत्रों का भी संपादन किया। साप्ताहिक सुलगते प्रश्न, पाक्षिक पीछोला, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी का रंगयोग तथा ट्रायबल रिसर्च इंस्टीट्यूट की ट्राईब पत्रिका के लिए जब-जब भी रचना सहयोग के लिए निरगुणेजी को लिखा, उन्होंने बड़ी सदासयता के साथ रचनाएं भेजीं।

20 फरवरी 2002 के एक कार्ड में तो उन्होंने यहां तक लिखा- 'जब एक बड़ा भाई किसी यज्ञ-कार्य में संलग्न हो जाय तो मुझे भी आहूतियां उसमें देनी ही हैं, आवश्यक और अनिवार्य। आपके कामों का मैं आंख मींचकर प्रशंसक रहा हूं। यह आपके प्रेम और विश्वास की प्रतिश्रुति है।'

ऐसा नहीं है कि हमारी मैत्री केवल लिखत-पढ़त तक ही सीमित रही। घर-परिवार की मांदगी और विकट परिस्थितियों के दुखद क्षणों को भी हमने आपस में साझा किया। दुख में दुख की बजाय दुख में सुख प्रदान करने वाले दायित्वों का भी बखूबी निर्वाह किया। ऐसा भी हुआ जब हम दो-दो, चार-चार महीनों तक एक-दूसरे की कुशलक्षेम से दूर रहे।

एक जनवरी 2003 को नये वर्ष पर उम्मीद तो यह थी कि वे आनंद-उल्लासपरक समाचारों से खुशियां बांटेंगे किंतु जब उनका अत्यंत ही निराशा भरा मन को विकल देने वाला कार्ड मिला तो कई दिन तक मैं इतना अनमना रहा कि उनसे न कोई सम्पर्क कर पाया और न पत्र ही लिख सका।

उन्होंने लिखा- 'पिछले दो माह अत्यधिक यातना में जीवन-मरण के संघर्ष में बीते। इस बीच मुझे दो बार मौत से सामना करना पड़ा। दो बार हार्ट अटैक आया। ईश्वर की महती कृपा रही कि दोनों बार उसने बचा लिया अन्यथा आपको इस समय पत्र नहीं लिख रहा होता। इसमें आप जैसे बड़े भाइयों की सद्भावना और स्नेह का भी योगदान है। जितना जीवन अब शेष है, उसमें बचे कार्य पूरे करने हैं।'

लगभग एक माह के बाद जब मेरी मनस्थिति अनुकूल हुई तो मैंने 30 जनवरी को पत्र लिखा। क्या लिखा मुझे मालूम नहीं किंतु मेरा पत्र मिलते ही उन्होंने 4 फरवरी को लिखा- 'आपके पत्र और बाद में फोन के मीठे बोलों ने मुझे जीने का असीम संबल दिया है।

- शेष पृष्ठ सात पर

बुमराह रॉयल स्टैग के ब्रांड एंबेसेडर बने

उदयपुर। सीग्राम के रॉयल स्टैग ने अपनी सपनों की टीम में दुनिया के अग्रणी गेंदबाज जसप्रीत

बुमराह को शामिल किया गया है। कार्तिक मोहिन्द्रा, सीएमओ, परनोड रिकॉर्ड इंडिया ने कहा कि आइसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप और हाल ही में आयोजित वेस्टइंडीज टुअर में बुमराह ने शानदार प्रदर्शन किया है। बुमराह बेहद प्रतिभाशाली हैं और उनमें कमाल का सामर्थ्य है, जो उन्हें ब्रांड की फिलॉसोफी के अनुरूप बनाता है। क्रिकेट हमेशा से ही रॉयल स्टैंग के ब्रांड संचार के केन्द्र में रहा है। विगत वर्षों में, ब्रांड ने दुनिया के शीर्ष क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ निरंतर सहयोग किया है और इससे देश भर में क्रिकेट प्रेमियों के साथ इसकी भागीदारी मजबूत हुई है। ब्रांड ने 2018 में आइसीसी के साथ 5 सालों का सहयोग किया था और वर्तमान में दुनिया भर के प्रमुख क्रिकेटिंग सितारों द्वारा इसका विज्ञापन किया जा रहा है। जसप्रीत बुमराह ने कहा कि एक ऐसे ब्रांड के साथ जुड़कर मुझे बेहद खुशी हो रही है, जो खेल की ताकत और इसे बड़ा बनाने के जोश के साथ निरंतर भारत को प्रेरित करता है।

लैंड रोवर डिफेंडर की पेशकश

उदयपुर। यह नई लैंड रोवर डिफेंडर है। यह इंटेलिजेंट और चालाक फीचर्स से युक्त है। पूर्ण रूप से सक्षम यह एसयूवी पूरे परिवार के लिए सुरक्षित है। नई डिफेंडर का निर्माण साहसी और हिम्मती दिल और उत्सुक दिमाग वाले लोगों के लिए खासतौर से किया गया है। इस एसयूवी में हल्के बैकग्राउंड में डार्क कलर की आउटलाइन दी गई है। यह न सिर्फ टफ दिखती है, बल्कि टफ है। एसयूवी की डिजाइनिंग एक उद्देश्य से की गई है। डिफेंडर को पर्सनलाइज किया जा सकता है जिससे गाड़ी के मालिक इसे अपनी जरूरतों के अनुसार ढाल सकें।

लैंड रोवर के चीफ डिजाइन ऑफिसर गैरी मैकगवर्न ने कहा कि नई डिफेंडर में कंपनी की पूर्व से निर्मित गाड़ियों से कुछ विशेषताएं ली गई है, पूर्व मॉडलों का पूरा सम्मान किया गया है, पर डिफेंडर का डिजाइन कंपनी की पहले से निर्मित गाड़ियों से काफी अलग है। यह नए युग की नई डिफेंडर है। इस गाड़ी का विशिष्ट मॉडल आदर्श अनुपात में दी गई लाइटर ब्रैकग्राउंड में डार्क कलर की विशेष आउटलाइन से प्रेरित है। मार्केट में इसकी मांग सबसे ज्यादा है और यह इसे खासतौर पर बेहद सक्षम बनाती है। अपनी बेजोड़ और बेमिसाल लक्जरी, रेंज रोवर फैमिली की शानदार एसयूवी और बेहद सक्षम और विविधतापूर्ण डिस्कवरी एसयूवी के अलावा नई डिफेंडर लैंडरोवर के वंश को पूरा करती है।

आरएसईटीआई के नये भवन का उद्घाटन

उदयपुर। वंचित वर्ग के युवाओं को नि:शुल्क व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्था

आईसीआईसीआई रूरल सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट आईसीआईसीआई आरएसईटीआई की नई इमारत का जोधपुर में उद्घाटन किया गया। भवन को भारतीय ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल द्वारा 'नेट जीरो एनर्जी- प्लेटिनम' रेटिंग से सम्मानित किया गया है, जिससे यह प्रतिष्ठित प्रमाणपत्र प्राप्त करने वाला देश का पहला नया भवन बन गया है।

यह पुरस्कार इस इमारत में उपलब्ध उन सुविधाओं की सीरीज को दी गई एक किस्म की मान्यता है, जिसकी वजह से इमारत में एक सस्टेनेबल एनवायर्नमेंट संभव हो पाता है। उद्घाटन ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार की अतिरिक्त सचिव श्रीमती अलका उपाध्याय और आईसीआईसीआई बैंक के चेयरमैन गिरीशचंद्र चतुर्वेदी ने किया। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि आईसीआईसीआई ग्रुप की सीएसआर इकाई आईसीआईसीआई फाउंडेशन फॉर इन्क्लूसिव ग्रोथ' वर्ष 2011 से उदयपुर और जोधपुर में आईसीआईसीआई रूरल सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट का संचालन कर रहा है। इसका प्राथमिक फोकस उन विषयों पर व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है जिनकी स्थानीय मांग है ताकि प्रशिक्षण पूरा होने पर प्रशिक्षु अपना उद्यम शुरू कर सकें। आईसीआईसीआई आरएसईटीआई ने ग्रामीण युवाओं को उनके घरों के नजदीक ही प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विभिन्न ब्लॉकों में सैटेलाइट केंद्र स्थापित किए हैं।

राज्य के 200 विद्यालयों में शिक्षा स्वच्छता शिक्षण-प्रशिक्षण

प्रत्येक विद्यार्थी को शिक्षा के साथ-साथ स्वच्छता का ज्ञान होना जरुरी है। प्रत्येक को अपने दैनिक जीवन एवं व्यवहार में इसको महत्व देना चाहिए। इससे हम स्वयं स्वस्थ रहेंगे तथा आस-पास के वातावरण को भी स्वच्छ एवं सुरक्षित रख पायेंगे। ये विचार प्रज्वला कार्यक्रम के अंतर्गत पाली में 6-7 सितंबर को आयोजित जल, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर दो दिवसीय शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षा विभाग पाली के एडीपीसी प्रकाशचन्द्र ने मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये। प्रज्वला कार्यक्रम राजस्थान बालिका शिक्षा विभाग, एनएससी फाउंडेशन, यूनीसेफ, के सहयोग से सेंटर फॉर एनवायरनमेंट एजुकेशन (सीईई) द्वारा राजस्थान के सभी 200 कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में चलाया जा रहा है।

पाली जिले में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में जल, स्वास्थ्य, स्कूल में साफ-सफाई के साथ-साथ

कचरा प्रबंधन, स्वच्छता, किशोरावस्था, माहवारी प्रबंधन, बाल संसद, किशोरी बालिका समूह निर्माण आदि पर विस्तृत रूप से पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन एवं विडियो/फोटो द्वारा जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में सीईई राजस्थान की कार्यक्रम संयोजक प्रियंका सिनसिनवर ने जल की मात्रा, उपयोग एवं दूषित जल से होने वाली बीमारियों की जानकारी दी।

प्रशिक्षित प्रतिभागियों ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान उन्हें स्वच्छता पर महत्वपूर्ण जानकारी मिली जिसे वे अपने विद्यालयों अन्य बालिकाओं एवं अध्यापिकाओं के साथ साझा कर सभी को जागरूक करेंगी। सीईई जयपुर के मुकेशकुमार ने बताया कि कार्यक्रम का संचालन पाली, सिरोही एवं जालोर सीईई के सहभागी अलर्ट संस्थान उदयपुर द्वारा किया गया। प्रशिक्षण में ममता मौर्य, दीपाली चौहान, अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता, जिला समन्वयक के साथ तीन जिलों से कुल 22 कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों की 30 अध्यापिकाओं एवं वार्डनों ने भाग लिया।

पीआईएमएस में एमबीबीएस के नये छात्रों का प्रवेशोत्सव

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा में बुधवार को एमबीबीएस सत्र 2019-20 के नये छात्रों का प्रवेशोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल एवं एग्जेक्यूटिव डायरेक्टर शीतल अग्रवाल थे।

आशीष अग्रवाल ने कहा कि यह संस्थान छात्रों के मेडिकल शिक्षण में अधुनातन अध्ययन एवं आवश्यक सुविधाओं से परिपूर्ण है। छात्रों के सम्यक् प्रकारेण उन्नयन एवं विकास संबंधी सभी सुविधाएं यहां उपलब्ध हैं। अध्यापन के लिए तीन-चार दशकों के निष्णात शिक्षकों से छात्रों को हर संभव ज्ञानार्जन उपलब्ध रहेगा। यहां पर बेस्ट फेकल्टी, आधुनिक एक्यूपमेन्ट और क्वालिटी एजुकेशन उपलब्ध रहेगी। शीतल अग्रवाल ने नये छात्रों को बधाई देते हुए उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

प्रिंसिपल डॉ. बी. एल. कुम्हार ने कहा कि अच्छा डाक्टर बनने के लिए अच्छा इंसान बनना जरूरी है। अच्छा इंसान ही मरीजों की तकलीफों को समझ सकता है और जो मरीजों की तकलीफों को समझ गया, वह अच्छा डाक्टर बन जायेगा। वाइस चांसलर डॉ. इन्द्रजीत सिंघवी ने कहा कि प्रेक्टिकल किये बिना किसी चीज को नहीं सीखा जा सकता है। इस अवसर पर मेडिकल सुप्रीडेंट डॉ. चन्दा माथुर, मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एस. के. गौतम ने कहा कि नये छात्र अपने अध्ययन द्वारा न केवल अपने परिजन, समाज में ही प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे अपितु विश्वविद्यालय का भी नाम रोशन करेंगे।

'द बिग बिलियन डेज़' की वापसी

उदयपुर। भारत के अग्रणी ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने देश में त्योहारी सीज़न का आगाज़ करते हुए अपने प्रमुख फ्लैगशिप इवेंट 'द बिग बिलियन डेज़' 29 सितंबर से 4 अक्टूबर तक आयोजित करने की घोषणा की है। फ्लिपकार्ट प्लस उपभोक्ताओं के लिए 4 घंटे की अर्ली एक्सेस सुविधा की पेशकश की गई है। इस बार त्योहारी सीज़न के दौरान शॉपिंग अधिक आसान और सभी ग्राहकों के लिए सुलभ बनाने के मकसद से, फ्लिपकार्ट ने कार्डधारकों को खास पेशकश दिलाने के लिए एक्सिस तथा आईसीआईसीआई बैंकों के साथ भागीदारी की है।

फ्लिपकार्ट ग्रुप के सीईओ कल्याण कृष्णामूर्ति ने कहा कि इस साल, हमने पहले से भी अधिक बड़े पैमाने पर, ब्रांड्स, एमएसएमई, विक्रेताओं तथा कारीगरों के साथ भागीदारी करते हुए अपने ग्राहकों के लिए अभूतपूर्व सलेक्शन और यूज़न अनुभव दिलाने का प्रयास किया है। भारत के मनपसंद फेस्टिव इवेंट बिग बिलियन डेज़ के लिए और बड़े पैमाने पर पार्टनर ब्रांड्स को जोड़ा जाएगा जो ग्राहकों के लिए विभिन्न टचप्वाइंट्स पर आकर्षक पेशकश लेकर आ रहे हैं। बिग बिलियन डेज़ 2019 के लिए, फ्लिपकार्ट ने बॉलीवुड एवं स्पोर्ट्स सुपरस्टार्स जैसे अमिताभ बच्चन, दीपिका पादुकोण, आलिया भट्ट, विराट कोहली और एम एस धोनी के साथ भागीदारी की है। बिग बिलियन डेज़ का उत्सव देशभर में होगा और इसमें महानगरों के अलावा टियर 4 और उससे आगे के बाज़ारों की भागीदारी भी रहेगी।

'अफ्रीका सेवा यात्रा-2019 शुरू

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भारतीय संस्कृति की भावधारा के तहत 'अफ्रीका सेवा टूर-2019' शुरू हो गया है। सेवा ट्यूर में संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल के नेतृत्व में डाक्टर्स, प्रोस्थेटिस्ट एवं ऑर्थोटिस्ट तथा प्रतिभाशाली दिव्यांग युवाओं का दल शामिल है। 22 सितम्बर तक अफ्रीका के नैरोबी, मुम्बासा, लेनासिया, डर्बन आदि शहरों में आयोजित सेवा शिविरों में पोलियो करेक्टिव सर्जरी के लिए चयन, आर्टिफिशियल मॉड्यूलर लिम्ब (कृत्रिम अंग) वितरण के साथ ही दिव्यांग टेलेन्ट शो तथा जन्मजात दिव्यांगता की रोकथाम व दिव्यांगों को आत्मनिर्भरता प्रदान करने के लिए संगोष्ठियां भी आयोजित की जाएंगी।

प्रवक्ता रविश कावड़िया ने बताया कि मुम्बासा में मुम्बासा सीमेंट लि. के सहयोग से आयोजित दो दिवसीय शिविर में 230 दिव्यांग बच्चों व किशोर-किशोरियों का पंजीयन हुआ, जिनमें से नि:शुल्क सर्जरी के लिए 89 का चयन चिकित्सकों द्वारा किया गया। शिविर में 63 दिव्यांगों के कृत्रिम अंग (हाथ-पैर) बनाने के लिए प्रोस्थोटिस्ट ने नाप लिए। इस दौरान दिव्यांग योगेश एवं जगदीश सहित संस्थान की टीम ने अपने शारीरिक कौशल व सौष्ठव से दर्शकों को आश्चर्य चकित कर दिया।

खोज-खबर

देवों में देव रामदेव

रामदेव के पिता अजमलजी के कोई सन्तान नहीं थी और मूंछें भी नहीं थीं। एकबार एक किसान हल लेकर खेत पर जा रहा था। सामने से उसे अजमलजी आते मिले सो वह अपशकुन समझ घर लौट गया। अजमलजी ने सोचा कि राजा होकर वह किसान मुझे क्या समझ बैठा जो घर लौट गया।

वे उस किसान के पास गये। पूछने पर किसान बोला, आप निपूते हो और मूंछें भी नहीं हैं सो मुझे अपशकुन हो गए। पहले भी ऐसा हुआ सुना गया। आपके शकुन लेकर जिसने भी खेत में बीज डाले उनसे न तो फसल ही पकी और न उनमें दाना ही आया। पूरी फसल बांडी की बांडी रह गई। किसान के इस कथन से अजमलजी बड़े सोच में पड़ गए।

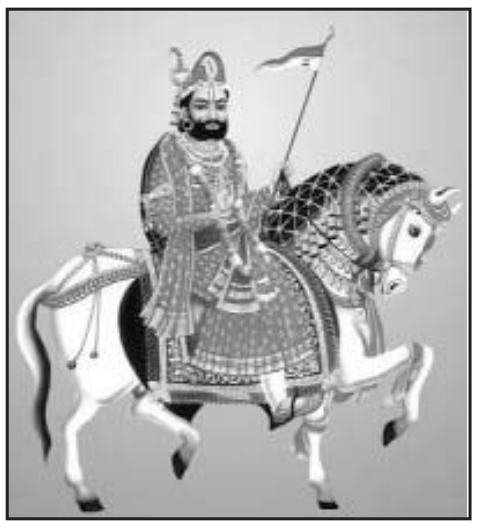

किसी समझेबुझे से पूछने पर उसने द्वारिका जाकर भगवान द्वारिकाधीश के दर्शन कर उनसे पुत्र रत्न प्राप्त करने का सुझाव दिया। फलस्वरूप उन्होंने एक-एक कर दस बार पैदल जाकर द्वारिकाधीश के दर्शन किये पर कोई फल नहीं मिला तब ग्यारहवीं बार वे बिना जूतों के अरवाने पांव दर्शनार्थ गये।

वहां द्वारिकाधीश के समक्ष जाकर कहा कि मुझे पुत्ररत्न प्राप्ति का वरदान दोगे तो ही आपको कुछ मानूंगा और वहीं उनके सामने बैठ अड़ंगबड़ंग जो मन में आया उन्हें सुनाने लग गये। पंडा उनसे ऐसी बातें सुन परेशान हो गया और उसे वहां से बाहर कर दिया।

अजमलजी उस पंडे पर बुरी तरह बिगड़ पड़े तब पंडे ने राय दी कि मन्दिर के पीछे जो समुद्र है, उसके बीचोंबीच पानी की भंवरें गोल-गोल आकृति बनाती मिलेंगी, उसमें कूद जाना तब भगवान के दर्शन होंगे और मनचाही मुराद पूरी होगी।

अजमलजी ने यही किया। उस भंवर में उन्हें कृष्ण ने राधा के साथ दर्शन दिये। अजमलजी घबराये हुए थे सो जितना जो कुछ सुनाना था, सुना गये तब कृष्ण ने कहा कि भादवी बीज को तुम्हारे घर में मेरा अवतार होगा। जा, तेरा मन धारा काम पूरा होगा। समुद्र ने अजमलजी को अपने अंक में स्वीकार नहीं कर किनारे फैंक नया जीवन दिया।

अजमलजी महल पहुंचे। चप्पा-चप्पा साफ-सफाई कराई। सुगंधित द्रव का छिड़काव किया गया। सब ओर फूलों की सजावट की गई और मंगल बधावे गाने वाले तथा वादक बुलवाये गए। पूरी नगरी में हर्ष-उल्लास के वातावरण के बीच रामदेवजी का अवतरण हुआ।

रामदेवजी ने कई चमत्कारिक परचे दिये। राक्षसों का संहार किया। अंधे, बहरे, लूले, लंगड़े तथा नाना समस्याओं से ग्रस्त व्यक्तियों का संकट मोचन कर खुशहाल जीवन दिया।

रूणीजा के अशान्त क्षेत्र को सुखद बनाया और मन्दिर में बिराजमान हुए। तब से लेकर प्रतिवर्ष ही उनकी धाम बढ़ती जा रही है। वहां जो भी जाता है उसे चमत्कार ही चमत्कार हाथ लगता है। कहा जाता है कि एक लाख व्यक्ति वहां कभी एकत्र नहीं होते। उनमें से एक व्यक्ति का राक्षस के रूप में खात्मा होता है। लोग आते रहते हैं और जाते रहते हैं। स्थायी रूप से एक लाख लोग कभी वहां बसेरा नहीं करते।

रामदेवजी को मानने वाले अधिकतर नीची जाति के लोग कहे जाते हैं। कहावत भी है- 'रामदेवजी को ढेड़ ही ढेड़ मिले।' लोकजीवन में रामदेवजी पर अनेक गीत तथा ख्याल लिखे मिलते हैं। रात-रात भर भजन मण्डलियां उनके भजन, ब्यावले गाकर रात्रि जागरण करती हैं।

डूंगरपुर में नटुभाई से मजेदार मिलन

डूंगरपुर की सिलावटवाड़ी में नटुभाई से मिलकर कई रोमांचकारी जानकारियों से समृद्ध हुआ। उनसे मेरी भेंट 02 फरवरी 1980 को हुई। उन्हें अनेक किस्से और आपबीती घटनाएं याद थीं। वे मुझे बड़े मजेदार और रसिक रंगदार ही लगे।

नटुभाई ने बताया कि आजादी के बाद उन्होंने जवाहरलाल नेहरूजी से जुड़ी महिलाओं के अनेक किस्से सुने। उनमें एक श्रद्धामाता थीं। यह भाग्य की बात रही कि उन्होंने श्रद्धामाता को न केवल देखा सुना बल्कि उनके साथ भी रहे। उन्होंने सुनाया कि सन् 1959 के किसी महीने में अहमदाबाद के प्रेमाभाई हॉल में उन्होंने श्रद्धामाता का भाषण सुना जो अभी भी वे याद किये हैं। उस भाषण में श्रद्धामाता ने कहा कि बहुत से व्यक्ति मेरे पास मुझे देखने, सुनने और मेरी उम्र तथा मैं कितनी सुन्दर हूं, के लिए आते हैं।

श्रद्धामाता ने कहा कि मैं अपने भाषण में कोई नई बात नहीं कह रही हूं। वही कह रही हूं जिसे अनेक लोग कहते आये हैं। मेरे पास आदमियों का अभाव है सो मैं ऐसे व्यक्ति की तलाश में हूं जो मेरे साथ रह सके।

नटुभाई ने वहां श्रद्धामाता के और भी भाषण सुने। वहीं नटुभाई ने उनसे भेंट भी की। छह माह बाद श्रद्धामाता फिर वहां आई। वह जामनगर भी गई। वहां उसने नटुभाई को बुलाया। उसका सेक्रेटरी कोई उपाध्याय था। नटुभाई वहां श्रद्धामाता से मिले। इस प्रकार धीरे-धीरे वे श्रद्धामाता के सम्पर्क में आये।

नटुभाई हिमालय भी रहे। वहां श्रद्धामाता के साथ रहते-रहते उनका खाना भी बनाने लग गये। वहां कड़ाके की सर्दी में श्रद्धामाता साधना करती। अनेक बार उन्होंने श्रद्धामाता को जलते मुर्दे के वहां बैठ चंडीपाठ करते देखा। वह शक्ति की उपासिका थीं। नटुभाई चुपचाप उसके पास बैठ जाते। जब उन पर श्रद्धामाता की नजर पड़ती तो वे उन्हें वहां से चले जाने को कहती। दिन को बारह-एक बजे से तीन-चार बजे तक उपासना में लगी रहती।

श्रद्धामाता का प्रभाव सुन औरतें दौड़ी-दौड़ी आतीं। भजनभाव करतीं। कुछ औरतें धुनने लगतीं तो श्रद्धामाता उन्हें शान्त कर देतीं। श्रद्धामाता उन्हें ढोंगी कहती।

हिमालय में एक दिन नटुभाई को भोजपत्र की बाटी बना खिलाने को कहा। वे करीब डेढ़ वर्ष वहां रहे। इस बीच जब उनका पांव सूज गया तो श्रद्धामाता ने कोई सहानुभूति नहीं दिखाई और टूटता-सा जवाब दिया कि भूटिया लोगों से जाकर मांग खाओ। इस पर उनके आपस में खटपट हो गई। वे बोले भी कि मेरा डेढ़ वर्ष उन्होंने बर्बाद कर दिया है।

यहां से नटुभाई गंगोत्री चले गये। वह उन्हें ब्रह्मचारी कहती। श्रद्धामाता उन्हें वहां मनाने पहुंची। उसके टकेपैसे की पोटली नटुभाई के पास रहती थी। एकबार नोटों से भरी छबड़ी गुस्से ही गुस्से में नटुभाई ने गंगाजी में फैंकदी। श्रद्धामाता उनकी शक्ल देखती रह गई।

नटुभाई ने बताया कि गंगोत्री में एक अवधूत मिला जो पहुंचा हुआ तपस्वी था। उसने उनसे कहा कि यहां अपना समय व्यर्थ क्यों बर्बाद कर रहे हो। नटुभाई बोले कि वे तो नाचने का काम करते थे। इस पर वह बोला, तो नाच कर दिखा। वहीं नटुभाई की चिन्मयानंदजी से भेंट हुई। उस समय तो वे मामूली आदमी ही थे। नटुभाई मद्रास के एक दल में नाचने का काम करते थे। उनके गुरु कनन नायर भी उनके साथ रहे। साल भर उनके साथ रहने के उपरान्त वे भी श्रद्धामाता के सम्पर्क में आये।

हिमालय से पूर्व नटुभाई श्रद्धामाता के साथ एक मोटी बगीची में दिल्ली रहे। वहां अधिकतर कॉलेज की छात्राएं आती थीं। एक दिन श्रद्धामाता ने नटुभाई से कहा कि यदि वे चाहें तो कॉलेज की किसी लड़की से उनका विवाह कराया जा सकता है। नेहरूजी से श्रद्धामाता की अच्छी जान पहचान थी। एकबार तो नेहरूजी उस बगीची में भी आये।

श्रद्धामाता अच्छा ओढ़ती पहनती बनठन के रहती थी। वह कोई कच्चीपोची खिलाड़ी नहीं थी। उसका बड़ा प्रभाव और रौब था। वह अधिकतर मेकअप में रहती तथा कोकोनट ऑयल का उपयोग करती। ये नटुभाई ही स्वतंत्रता सेनानी नटवरलाल थे।

सेवा विभूति उमादत्तजी

कानोड़ में सरकारी मिडिल स्कूल के हेडमास्टर को उमादत्तजी माड़साब के नाम से जानते थे। वे डाकघर भी संभालते थे। धोती, बिना कालर का कमीज, कमीज पर पूरे बटनवाला कोट और सिर पर सफेद टोपी धारी माड़साब के हाथ में हर समय लाठी रहती थी। उनकी लाठी देखकर हमें गिरधर कविराय की 'लाठी में गुन बहुत है, सदा राखिये संग' कुंडलियां याद हो आती।

माड़साब रहने वाले फर्रुखाबाद, कन्नौज के थे। सन् 1932 में कानोड़ रावजी बेगूं से अपने ठिकाने में लाए। वे सेवानिवृत्ति तक कानोड़ में ही रहे। जब विदाई हुई तो गांधी चौक में लोगों ने अपने को ही नहीं, माड़साब भक्त कुत्तों को भी रोते देखा।

सुबह चार बजे से माड़साब की दैनिक चर्या प्रारंभ हो जाती। चार किलोमीटर घूमते। कमलवाले तालाब पर नहाते। कभी भी कपड़ों को और न शरीर को ही साबुन से स्पर्श कराया। अपने कोट की मोटी जेबों में कार्ड लिफाफे रखते। जिसे जरूरत होती उसे देते चलते। ऐसे ही मनीऑर्डर की रकम हाथोंहाथ पहुंचाते। चलते जाते, जो भी मिलते, उसकी कुशलक्षेम पूछते। किसी को कोई हल्की-फुल्की बीमारी होती, उसके घर पहुंच जाते। ताव तेजरा निकाला होता उसे अपने पास रखी कुनैन की गोली देते। जेब में रखा अखबार खोल, सयानों को समाचार सुनाते।

माड़साब सदैव स्मित हास्य लिए रहते। उनकी कन्नौजी के लहजे में मेवाड़ी बोली सबको मोहित किए रहती। होशियार और ठोठी दोनों तरह के बच्चों की खबर उनके अभिभावकों तक देते। अत्यंत सादगी से उनका जीवन चलता। छोटे से कमरे में रहते। सारा काम स्वयं करते। दूसरा कोई था भी नहीं। दोनों समय भोजन बनाते। स्वाद विहीन सात्विक भोजन ऐसा कि एक लाल मिर्च दाल में तीन बार घुमाकर धागे से बांध लटका देते। कहते, महीने की दो लाल मिर्च लेता हूं। एक ही दाल बनती। एक दाल सब डाल, एके साधै सब सधै वाली कहावत पूरी होती।

अपने कोट की जेब में घड़ी रखते। कई लोग उनसे समय पूछते। खादी पहनते। रामायण का पाठ करते। देश में कहां क्या हो रहा, उसकी खबर देते। कोई उनसे कभी नाराज नहीं हुआ। जिनके बच्चे नहीं पढ़ते उन्हें कहते, बच्चा पढ़ेगा तो लायक बन जायेगा। पढ़ेगा तो पूरे परिवार को रूपयों पैसों से जड़ेगा नहीं तो आगे जाकर रोटी के भी लाले पड़ जायेंगे। माड़साब कभी बीमार नहीं हुए।

माड़साब को कभीकभार उदयपुर आना होता तो पैदल ही चल पड़ते। सुबह चलते, शाम को पहुंच जाते। और भी उनके साथ हो जाते। कहानी-किस्सों का उनके पास खजाना रहता। रस ले-लेकर सुनाते और अपनी टिप्पणी भी करते जाते। कइयों के छोटे-मोटे काम माड़साब निपटा देते।

हम लोग या तो दीवाली की छुट्टियों में या फिर गर्मियों की छुट्टियों में कानोड़ रहते तब डाक के समय उनके वहां पहुंच जाते। उनके साथ सभी जमीन पर बैठे-बैठे गप्प लगाते। वे अपना काम भी करते रहते। गट्या महाराज छोटी थड़ी के बड़े हंसमुख माड़साब जैसे ही थे। प्रतिदिन स्टेशन से पैदल डाक लाते। पसीना-पसीना हो जाते। कभी-कभी डाक का थैला पूरा भर जाता तो पीठ पर ठेठ नीचे तक लटका मिलता। वे भी अकेले ही थे। माड़साब जैसे ही स्वभाव के थे। माड़साब सेवा की विभूति थे तो गट्या महाराज भी उन्हीं की भभूति थे।

अनपढ़ लोगों की माड़साब पूरी सहायता करते। उनके तार पढ़ते। कागज भी पढ़ते और घबरानेवाले समाचार होते तो उन्हें तसल्ली देते। हम लोग पोस्ट ऑफिस में ही हमारी डाक ले लेते। पत्र-पत्रिकाएं भी वहां पढ़ लेते। पढ़े-लिखे लोगों का बड़ा सम्मान करते। विपिन जारोली ने तो एक रूपया महावार में डाक बांटने का काम भी किया। यूं करते-करते ही वे साहित्य सेवी बन गये। **- म. भा.**

अलीबाबा की फिलैनथ्रॉपी इकाई द्वारा फिलैनथ्रॉपी फोरम का आयोजन

उदयपुर। अलीबाबा समूह के यूसीवेब ने इसकी फिलैनथ्रॉपी इकाई अलीबाबा फाउंडेशन की ओर से भारत में द्वितीय फिलैनथ्रॉपी फोरम की मेज़बानी की जिसका उद्देश्य इस देश में वैश्विक शिक्षा को आगे बढ़ाना है। इस फोरम में जिन पहल की घोषणा की गई उनमें अलीबाबा की ब्राउज़र यूनिट यूसीवेब द्वारा इंटरनेट प्लस फिलैनथ्रॉपी मॉडल की स्थापना करना है जिसका लक्ष्य एक ऐसे जिम्मेदार कंटेंट पारितंत्र का निर्माण करना है जिससे भारत में डिजिटल खाई को पाटने, रोजगार सृजित करने और गरीबी दूर करने में मदद मिल सके। यूसी ब्राउज़र विश्व का नंबर 1 थर्ड पार्टी मोबाइल ब्राउज़र है जिसके दुनियाभर में (चीन को छोड़कर)1.1 बिलियन यूज़र डाउनलोड्स हैं जिसमें आधे भारत से हैं।

यूसीवेब ग्लोबल बिज़नेस के उपाध्यक्ष हुआइयुआन यांग ने कहा कि नई दिल्ली का यह फोरम, चीन के हांगझोउ में संपन्न हुए अलीबाबा फाउंडेशन के 9.5 फिलैनथ्रॉपी कॉन्फ्रेंस 2019 का हिस्सा है जिसमें भारत में शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है और साथ ही इस बात पर भी ध्यान दिया जा रहा है कि शिक्षा के लिए समान अवसर देकर हर किसी को सशक्त करने में इंटरनेट का किस तरह से उपयोग किया जा सकता है। भारतीय अभिनेत्री और लेखिका टिस्का चोपड़ा की मेज़बानी में हुए इस फोरम के तहत विश्वभर के कल्याण, कारोबार और सामाजिक क्षेत्रों से कई दिग्गज वक्ता एक मंच पर आए जिनमें दिल्ली के उप मुख्यमंत्री की राष्ट्रीय कार्यकारी सलाहकार अतिशि मरलेना, अभिनेत्री रिचा चड्ढा और यूनिसेफ की प्रतिनिधि अल्का मलहोत्रा शामिल हैं।

पीआईएमएस को राज्य स्तरीय पुरस्कार

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस),हॉस्पिटल उमरड़ा को जयपुर में आयोजित विश्व जनसंख्या दिवस के तहत हुए कार्यक्रम में परिवार कल्याण राज्य स्तरीय पुरस्कार (2018-19) से सम्मानित किया गया। पीआईएमएस की ओर से डॉ. एस. के. सामर के प्रतिनिधि के रूप भैरूलाल गुर्जर ने शिल्ड, प्रशंसापत्र एवं नकद राशि ग्रहण की। मुख्य अतिथि चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री रघु शर्मा थे। अध्यक्षता हेमंतकुमार गेरा ने की।

पीआईएमएस के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि पीआईएमएस में परिवार कल्याण की सभी सेवाएं वर्ष 2015 से प्रारंभ की गई और अब तक 5400 सफल नसबन्दी ऑपरेशन किये जा चुके हैं। इसमें 152 पुरुष नसबन्दी नई तकनीक एन.एस.वी द्वारा की गई है जो पूर्ण रूप से सफल रही है। डॉ. सामर व उनके दल द्वारा किये गए कार्यों के लिए पीआईएमएस पिछले दो वर्षों से लगातार राज्य स्तर पर अव्वल रहा है।

सम्मान के पश्चात उदयपुर पहुंचे पीआईएमएस के प्रतिनिधि का चैयरमेन आशीष अग्रवाल एवं अन्य पदाधिकारियों ने स्वागत किया।

एचडीएफसी बैंक के राज्य में 20 वर्ष पूरे

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने राजस्थान में अपनी सेवा के 20 वर्ष पूर्ण होने की घोषणा की। राजस्थान में निजी क्षेत्र का यह पहला बैंक है जिसने इतनी लम्बी यात्रा को पूरा किया है। राजस्थान में बैंक ने अपनी यात्रा का आगाज वर्ष 1999 में सी-स्कीम जयपुर से किया था। एचडीएफसी बैंक राज्य के 20 लाख ग्राहकों को अपनी विविध सेवाएं उपलब्ध करवा रहा है। अपनी 181 शाखाओं और 367 एटीएम्स नेटवर्क के माध्यम से बैंक ने राजस्थान के सुदूर इलाकों तक अपनी पहुंच बनाई है। हर जिले में अपनी उपस्थिति के साथ यह राज्य का सबसे बड़ा निजी क्षेत्र का बैंक है जो असेवित क्षेत्रों को अपनी बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवा रहा है।

एचडीएफसी बैंक के शाखा बैंकिंग के प्रमुख जसमीतसिंह आनंद ने कहा कि इस यात्रा को मनाने के लिए, बैंक ने 1 अगस्त को 20 साल बेमिसाल मेगा अभियान शुरू किया। इस अभियान के तहत बैंक ने प्रगति यात्रा नामक एक कार रैली लांच की है जो लोगों को मजबूत बैंकिंग प्रथाओं के लिए जागरूक करेगी। यह यात्रा बैंक के 'दुकानदार धमाका' पहल का ही एक हिस्सा है जिसका उद्देश्य व्यापारियों, दुकानदारों और ग्राहकों के बीच डिजिटल लेनदेन के बारे में जागरूकता पैदा करना है। विगत 20 वर्षों के दौरान बैंक ने राजस्थान के लोगों के लिए केवल आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का कार्य ही नहीं किया अपितु प्रदेश के ग्रामीण अंचलों का उत्थान एवं अपनी सामाजिक पहलों के माध्यम से स्थाई परिवर्तन लाने का काम भी किया है।

मैक्स लाइफ इंश्योरेंश का ब्रांड अभियान 'यू आर द डिफरेंस'

उदयपुर। मैक्स लाइफइंश्योरेंस कंपनी लि. (मैक्स लाइफ कंपनी) ने अपने ब्रांड से जुड़े नए विचार को लॉन्च किया जो इस बात का भरोसा देता है कि आपके प्रियजनों की जिंदगी में आप 'यू आर द डिफरेंस' हैं। ब्रांड से जुड़ा यह नया विचार मैक्स लाइफ की उसी सोच के अनुरूप है जिसमें ग्राहकों को इस बात के लिए प्रेरित किया जाता है कि जीवन बीमा लेते खरीदते समय वे 'जीवन की सही कीमत' को समझें और उसे अपनाएं।

मैक्स लाइफ के निदेशक और मुख्य विपणन अधिकारी आलोक भान ने कहा कि लोग केवल वर्तमान आर्थिक क्षमता के हिसाब से अपने मूल्य का आकलन करते हैं, इस तरह वे अपनी भविष्य की आर्थिक क्षमता की अनदेखी करते हैं और 'स्वयं' के मूल्य को कम आंकते हैं। जीवन से जुड़ी वास्तविक घटनाओं के जरिए हम इस बात को सामने लाएंगे कि हमारे ग्राहक उनके परिवारों के लिए कितना महत्व रखते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि जिन लोगों को ध्यान में रखकर हम इस अभियान को शुरू कर रहे हैं वे इस अभियान से जुड़ा हुआ महसूस करेंगे और हम उन्हें 'स्वयं' का सही मूल्य समझने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

'सही मूल्य' का हिसाब लगाने के लिए मैक्स लाइफने एक आसान टूल विकसित किया है जो आपकी वर्तमान और संभावित आर्थिक क्षमता के साथ आपके प्रियजनों की आकक्षांओं के मूल्य को भी ध्यान में रखता है। हमें विश्वास है कि अगर ग्राहक अपने 'सही मूल्य' को समझेंगे तो वे स्वयं इसको सुरक्षित बनाने की दिशा में काम करेंगे जिससे किसी भी परिस्थिति में उनके परिवार को कोई समझौता न करना पड़े।

'कारदेखो गाड़ी स्टोर' की शुरूआत

उदयपुर। कारदेखो ग्रुप ने उदयपुर में 'कारदेखो-गाड़ी स्टोर' की शुरूआत की है। यह कारदेखो ग्रुप की सहायक कंपनी है, जो यूज्ड कारों में डील करती है। कंपनी की योजना देशभर में 2020 तक 200 स्टोर खोलने की है, जिसके तहत उदयपुर में यह नया स्टोर खोला गया है। वर्तमान में दिल्ली-एनसीआर, जयपुर, पुणे, बेंगलुरु, अहमदाबाद, लखनऊ, हैदराबाद, करनाल और मुंबई में कंपनी के 56 स्टोर मौजूद हैं।

गाड़ीडॉटकॉम के को-फाउंडर और सीईओ, विभोर सहारे ने कहा कि कारदेखो गाड़ी धीरे-धीरे राजस्थान में अपनी पहुंच बढ़ा रही है। उदयपुर में लगातार कारों की बिक्री में वृद्धि देखी जा रही है, विशेषकर यूज्ड कार सेगमेंट में। कारदेखो गाड़ी स्टोर का लक्ष्य यूज्ड कारों के बाजार में ग्राहकों के लिए वन-स्टॉप डेस्टिनेशन बनना है। गाड़ी स्टोर की खासियत ग्राहकों को परेशानी मुक्त और भरोसेमंद माध्यम से कार बेचने के साथ उन्हें कार की अच्छी री-सेल वैल्यू, मुफ्त आर.सी. ट्रांसफर, लोन क्लोज़र असिस्टेंस, इंस्टेंट मनी ट्रांसफर और अपने आउटलेट पर कार निरीक्षण प्रदान करना है। विभोर सहारे ने कहा कि देशभर में मौजूद कारदेखो गाड़ी स्टोर को ग्राहकों से अच्छी प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं। देशभर में तेजी से बढ़ते गाड़ी स्टोर इस सेगमेंट में हमारे विश्वास की पुष्टि करते हैं। मैक्किंज़े एंड कंपनी की रिसर्च के अनुसार भारत में यूज्ड कारों का मार्केट लगातार बढ़ रहा है। यूज्ड कार सेगमेंट में भारत, एशिया का तीसरा सबसे बड़ा बाज़ार बन गया है। कारों की लाइफ-साइकिल, उत्सर्जन और सुरक्षा मानदंडों में बदलाव और इलेक्ट्रिक कारों के लॉन्च के चलते उपभोक्ता नई कारों की खरीद से बच रहे हैं। आंकड़ों की बात करें तो पिछले वित्तीय वर्ष में भारतीयों द्वारा 4 मिलियन से अधिक कारें बेची गईं।

4 बच्चों ने 17 मेडल जीते

उदयपुर। देबारी में 64वें जिलास्तरीय जन्मास्टिक प्रतियोगिता का आयोजन 1 से 4 सितम्बर तक किया गया। इसमें कुल 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में नारायण सेवा संस्थान के 4 निराश्रित बच्चों ने भी भाग लिया जिन्होंने 17 मेडल जीत कर समाज में अमिट छाप छोड़ी है। उल्लेखनीय है कि इस प्रतियोगिता में कुल 30 मेडल दिये गये।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि भगवान महावीर बालगृह में अध्यनरत इन निराश्रित बच्चों ने संस्थान का गौरव बढ़ाया है। इन सभी मेडल विजेताओं का व्यक्तिगत सम्मान किया जायेगा। बच्चों के कोच सचिन शर्मा ने बताया कि सभी बच्चे लगनशील और जुनूनी है। इनका भविष्य सुनहरा है। कृष्णा ने 3 गोल्ड - 1 सिल्वर, श्रवण ने 2 गोल्ड - 3 सिल्वर, अभियाराम ने 2 सिल्वर - 2 ब्रॉन्ज और राजू ने 4 ब्रॉन्ज मेडल जीते।

विस्तारा की उदयपुर-मुम्बई उड़ान 4 से

उदयपुर। भारत की पहली फुल सर्विस एयरलाइन विस्तारा ने शीतकालीन सत्र के लिए अपने नेटवर्क में उदयपुर और जोधपुर को जोड़ने की घोषणा की है। एयरलाइन अगले महीने से दो नये गन्तव्यों के लिए उड़ान शुरू करेगी। राजस्थान में इसके प्रवेश के साथ विस्तारा के कुल गन्तव्यों की संख्या 29 हो जाएगी। विस्तारा चार अक्टूबर से मुम्बई और उदयपुर के बीच दैनिक सीधी उड़ान संचालित करेगी और 29 अक्टूबर से दिल्ली और उदयपुर, दिल्ली और जोधपुर एवं मुम्बई और जोधपुर के बीच सीधी उड़ान के साथ अपने नेटवर्क का विस्तार करेगी। नई उड़ान के लिए इंट्रोडक्ट्री, सभी कर सहित इकोनोमी श्रेणी का एक तरफा किराया दिल्ली-जोधपुर के लिए 4099 रूपये, दिल्ली-उदयपुर के लिए 4399 रूपये, मुम्बई-उदयपुर के लिए 4599 रूपये और मुम्बई-जोघपुर के लिए 6499 रूपये से शुरू होगा।

श्राद्ध पक्ष में.....

(पृष्ठ एक का शेष)

ढोली के साथ ढोल के रूप में मकई का डंठल, डूंडा और एक हाथ में ढोल बजाने के डंडे का प्रतीक तिनका लगा दिया जाता है। मालन के सिर पर फूलों की छाबड़ी बना दी जाती है। खापर्‌या चोर की मूंछों की जगह भुट्टे की पूंछियां लगा दी जाती हैं। जाड़ी जोधा अपेक्षाकृत मोटी होती है जबकि पतली पेमा क्षीणकाय बनाई जाती है। इन सबको तरह-तरह के फूलों, पंखुड़ियों के अलावा छोटी-छोटी पत्तियों, मकई-ज्वार, गेहूं-चावल के दानों, कपड़े की छोटी-छोटी रंगीन चिंदियों मालीपन्नियों एवं घास के बीजों जैसे उपकरणों से सजाई जाती हैं। तीनों दिन कोट को सुरक्षित रखते हुए प्रतिदिन संध्या की विविध गीतों और आरतियों के साथ आनुष्ठानिक पूजा की जाती है। अंतिम दिन संझ्या विसर्जन का होता है। प्रतिदिन बनाई जाने वाली संझ्या जो एकत्र कर सुरक्षित करली जाती है, उसके साथ कोट की सांझी को मिलाकर लड़कियां नवीन वस्त्राभूषणों से सज्जित हो जुलूस के साथ पास के तालाब, सरवर अथवा नदी-तट पर एकत्रित हों पानी में विसर्जित कर विदाई देती हैं। संझ्या संबंधी अनेक छोटे-छोटे गीत मिलते हैं। इन गीतों में अपनी अबोध एवं भोली सहज मनोभावनाओं के साथ लड़कियां जो कुछ कल्पना करती हैं उन सबका चितरावण मिलता है जिनका कहीं कोई तालमेल नहीं बैठता और न सांझी के संबंध में कोई प्रामाणिक जीवन-दर्शन ही हाथ लगता है। केवल कल्पनाओं के आधार पर जितनी भी बालिकाओं की उमंगें और महत्वाकांक्षाएं हो सकती हैं वे सब मुखरित हुई मिलती हैं। इससे उनके मनोविज्ञान का भी अच्छा-खासा विश्लेषण किया जा सकता है।

संझ्या विसर्जन के बाद बालिकाएं बहुत सारे उन भावों में खो जाती हैं जो उनके लिए भी कल्पनाजीवी सकारात्मक संजीवनी का काम करती हैं। एक गीत में बालिकाएं खोड्‌ये से पूछती हैं कि अब सांझी कहां होगी? क्या तुमने उसे कहीं देखा है? इस पर खोड्‌या जवाब देता है, कई बार, कई रूपों में उसे देखी थी। कभी एक पहाड़ी पर अनमनी सी उदास जाती हुई तो कभी छाछ बिलौती हुई। कभी हाथ में कांगसी-डोरा लिए अपना सिर गूंथाती हुई तो कभी सोने की थाली में भोजन परोसती अपने हाथ में रजत निर्मित जारी से पानी पीती देखी। अब सब स्मृति शेष हैं। जितने रूपों में उसकी छवि स्मृति पटल पर उभरती लगे, उतने अनेक रूप उसकी यादगार के बन सकते हैं।

वर्ष भर बाद प्रतिवर्ष ही श्राद्ध पक्ष आता है किंतु वे लड़कियां जो एक उम्र के बाद विवाहित हो पराये घर की पाहुन बन जाती हैं, संझ्या को धीरे-धीरे स्मृतिशेष करती हुई अपनी आत्मजाओं में स्मृति रूप में हस्तांतरित करती हुई पाई जाती हैं। नियति का कैसा अजीब लेखांकन है कि एक लड़की अपने मां-बाप से बिछुड़ कर न जाने कितनी स्मृतियां अपने साथ ले जाती हैं। सांझी जैसी केवल सांझी ही है जो फूल सी कोमल और सबकी चितेरी बनी हुई प्रत्येक बालिका के जीवन को न जाने कितने रंगों, स्वप्नों, परिकल्पनाओं और मिथकों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हुई सृष्टि के क्रम में अपने वंशानुक्रम से अपना जीवन सार्थक करती हैं।

संत से शतगुणे.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

फिर से जीवन की मुख्यधारा में आने की कोशिश कर रहा हूं। चार महीने पूरे निष्क्रियता के गये। गाड़ी पटरी पर आने में थोड़ी देर लगेगी। लोकसाहित्य, संस्कृति और लोककलाओं पर लिखने वाले बहुत कम लोग हैं। लोकसाहित्य के अध्येताओं का एक अखिल भारतीय सम्मेलन होना चाहिये जिसमें कुछ गंभीर विचार-विमर्श हो, आप इसी संस्था से यह काम ले सकते हैं।'

बीते इतने वर्षों में दिल्ली, उज्जैन, भोपाल, ईडर, उदयपुर, इन्दौर जैसे कई स्थानों में आयोजित संगोष्ठियों, समारोहों, उत्सवों, मेलों, बैठकों और आयोजनों में हमारी संगतें होती रहीं। कई जगह हमने साथ-साथ पत्रवाचन किये। मुख्य व्याख्यान दिये तो मंचासीन अतिथियों में भी सम्मिलित हुए।

भोपाल के एक समारोह की याद मुझे ताजीवन याद रहेगी जब वहां की अभिनव कला परिषद ने मेरा सम्मान कर मुझे 'श्रेष्ठ कला आचार्य' का संबोधन प्रदान किया। इसके संस्थापक पं. सुरेश तांतेड़ प्रतिवर्ष ही बड़े उल्लास और उत्साह के साथ देश के मूर्धन्य साहित्यकारों एवं कलाकारों का सम्मान करते हैं। युवा और वरिष्ठजनों का सम्मान करने के पीछे तांतेड़जी का यह लक्ष्य रहा कि भारतीय संस्कृति की पुरातन समृद्ध मूल्यवान धरोहर के रक्षक वरिष्ठजनों से युवा कलाकार शिक्षित एवं दीक्षित होकर उस संपदा को पारदर्शिता के साथ अपने में हस्तांतरित कर सकें। सम्मान स्वरूप प्रदत्त सरस्वती की पीत-प्रतिमा जितनी आकर्षक थी उतनी ही अनुपम एवं मूल्यवान बन मेरी बैठक की रौनक बनी हुई है। विदा लेते तांतेड़जी के प्रति जब मैंने अपने नमित भाव व्यक्त किये तो उन्होंने इसके पीछे निरगुणेजी की समझ का श्रेष्ठत्व बताया।

ऐसे मित्र अधिक होते हैं जो अपनी जरा सी हलचल को भी नगारे के ऊंट की तरह बजणी किये रहते हैं। बसंतजी ने तो मुझे कोई हवा तक नहीं दी किंतु उस दिन मंच पर सबसे पहले वे ही आये थे जिन्होंने मालाओं से मुझे मालामाल कर दिया था और जिनकी खुशबू अभी भी मुझे तर कर मनहर बनी हुई है।

51 दिव्यांग व निर्धन जोड़ों ने थामा एक-दूजे का हाथ

-नारायण सेवा संस्थान का निःशुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह-

उदयपुर। ढोल-नगाड़ों और शहनाइयों की गूंज के बीच रविवार 8 सितम्बर को नारायण सेवा संस्थान की ओर से स्मार्ट विलेज बड़ी में आयोजित हुए 33वें भव्य विशाल नि:शुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह में देशभर से आए 51 दिव्यांग एवं निर्धन जोड़े परिणय सूत्र में बंधे।

शुभ मुहूर्त में विवाह समारोह की रस्मों की शुरुआत हुई। विवाह गीतों पर थिरकते बारातियों के साथ घोड़ी पर आए दूल्हों ने तोरण की रस्म अदा की। इसके बाद विवाह स्थल पर बने विशाल पांडाल में देशभर से आए हजारों लोगों की उपस्थिति में वरमाला की रस्म हुई जिसमें पांच जोड़ों ने हाइड्रोलिक स्टेज पर तो बाकी ने स्टेज पर बारी-बारी से एक-दूसरे को वरमाला पहनाई। इन जोड़ों में कोई दूल्हा दिव्यांग था, तो कोई दुल्हन। तो कुछ जोड़ों में दोनों ही दिव्यांग थे। मगर सबका उत्साह देखते ही बन रहा था। वरमाला के दौरान कोई दूल्हा कृत्रिम उपकरणों की मदद से वरमाला थामे आगे बढ़ा तो कोई जमीन पर हाथों व पैरों की मदद से। तो कुछ ने व्हील चेयर पर वरमाला की रस्म अदा की। समारोह के साक्षी बने लोगों ने जोड़ों पर पुष्प वर्षा की। नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक कैलाश 'मानव', सह संस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल एवं शहर के गणमान्य नागरिकों ने जोड़ों को आशीर्वाद प्रदान किया।

इसके बाद कृत्रिम अंग वितरण समारोह हुआ जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से आए 51 दिव्यांगजनों को कृत्रिम उपकरण व अंग वितरित किए गए। यहां दिव्यांगजनों ने अपने जीवन संघर्ष के मर्मस्पर्शी संस्मरण सुनाए तो वहां उपस्थित लोगों की आंखें भर आईं। दिव्यांगजनों ने नारायण सेवा संस्थान को उनके कठिन और संघर्षपूर्ण जीवन में सम्बल प्रदान करने के लिए धन्यवाद अर्पित किया।

इसके पश्चात 51 वेदियों पर 51 आचार्यों ने मंत्रोच्चार के बीच विधि-विधान से विवाह की रस्मों को पूर्ण करवाया। इससे पूर्व अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल डोली में दुल्हन को लेकर पहुंचे तो पूरा पांडाल ही थिरक उठा। पाणिग्रहण संस्कार में कई जोड़ों के धर्म माता-पिता ने भी कन्यादान किया। वर-वधुओं को आशीर्वाद प्रदान करने अहमदाबाद, गाजियाबाद, जोधपुर, इंदौर, आगरा, नागपुर, दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, पूना, राजकोट, देहरादून, पटना, बड़ौदा गुड़गांव, सहित देश के कई राज्यों व शहरों से संस्थान के सहयोगी एवं अतिथिगण पधारे। समारोह में ट्रस्टी देवेंद्र चौबीसा, जगदीश आर्य, संयोजक गौरव शर्मा, दल्लाराम पटेल, रोहित तिवारी आदि विभिन्न व्यवस्थाओं में सहभागी बने।

शादी की खुशियों के बीच जब दिव्यांग बहनों की विदाई की वेला आई तो पांडाल में मौजूद सभी लोगों की आंखों से आंसू छलक आए। दूल्हनों को डोली में बिठाया गया। परिजनों, मित्रों के साथ ही धर्म माता-पिता ने मंगल आशीष देते हुए बेटियों को विदा किया। परिजनों ने नारायण सेवा परिवार का आभार जताया। संस्थान की ओर से सभी जोड़ों को उनके गांव, शहर में स्थित निवास स्थान तक छोड़ने के लिए विशेष बस, कार व अन्य वाहनों की नि:शुल्क व्यवस्था की गई। सभी जोड़ों को गृहस्थी का सामान दिया गया। दानदाताओं की ओर से भी उपहार दिए गए।

फोन उठाओ इंडिया को पढ़ाओ अभियान शुरू

उदयपुर। निहार शांति आमला ब्रांड ने 'फोन उठाओ इंडिया को पढ़ाओ' राष्ट्रीय पहल शुरू की है। यह ब्रांड हमेशा से सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध रहा है। शहर में स्थित केंद्रों के स्वयंसेवकों को एक आसान से फोन कॉल के जरिए वंचित समुदायों के बच्चों के साथ जोड़कर और फोन संवाद के माध्यम से बच्चों को अंग्रेजी बोलना सिखाना इस पहल का उद्देश्य है। इस पहल में शामिल होने के लिए उत्सुक स्वयंसेवक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। बच्चों से अंग्रेजी बोलने की प्रैक्टिस करवाने के लिए स्वयंसेवकों को फोन कॉल के लिए हफ्ते में सिर्फ 10 मिनट का समय देना है। मैरिको के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर कोशी जॉर्ज ने बताया कि निहार शांति आमला ब्रांड द्वारा पिछले पांच सालों से चलाए जा रहे निहार शांति पाठशाला फनवाला प्रोग्राम के जरिए बच्चों को आईवीआर पर आधारित ट्रेनिंग मॉड्यूल्स से मुफ्त में अंग्रेजी सिखाया जा रहा है। गांवों के तीन लाख से भी ज्यादा बच्चों पर इसके सकारात्मक असर दिख रहे हैं परंतु इस प्रोग्राम में यह भी दिखाई दिया कि कोई भी भाषा की शिक्षा उसके अभ्यास, प्रैक्टिस के बिना पूरी नहीं हो सकती।

नारायण चिल्ड्रन्स अकादमी के छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

उदयपुर। मेधावी मन्दिर पब्लिक स्कूल, तितरड़ी में सम्पन्न हुई 63वीं जिला स्तरीय जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में नारायण चिल्ड्रन्स अकादमी के छात्रों ने जिले में प्रथम स्थान हासिल किया।

अंडर 14 जिला स्तरीय जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में कुल 30 बच्चों ने भाग लिया। नारायण चिल्ड्रन्स एकेडमी के छात्र रनवीर भील ने ऑल राउंड प्रदर्शन कर गोल्ड मेडल जीता। नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि नारायण चिल्ड्रन्स एकेडमी के छात्र रनवीर भील की सफलता पर गर्व है। आशा है, रनवीर जिम्नास्टिक में नेशनल और इंटरनेशनल लेवल पर गोल्ड जीतकर देश और नारायण चिल्ड्रन्स एकेडमी का नाम रोशन करेगा।

PIMS हॉस्पीटल उमरड़ा उदयपुर

हार्ट केयर में सबसे विश्वसनीय नाम **पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, उमरड़ा**
जो रखता है आपके दिल का ख्याल हर पल क्योंकि केयर है सबसे बेहतर

कार्डियक केयर सेंटर

• हृदय की एंजियोग्राफी • एंजियोप्लास्टी • बाईपास सर्जरी • वाल्व बदलना एवं हृदय के छेद को बन्द करना
• बच्चों के हृदय संबंधित जटिलतम ऑपरेशन • चलने पर सीने में दर्द या सांस का फूलना
• हृदय गति का कम – ज्यादा होना • बच्चों के जन्म जात हृदय रोग • हृदय का वॉल्व सिकुड़ना।
• ईसीजी, टीएमटी, होल्टर, स्ट्रेस इको, डीएसई इको कार्डियोग्राम

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें – 8696440666

मल्टीसुपरस्पेशियलिटी सुविधाएं

कार्डियक सर्जरी	कार्डियोलॉजी	न्यूरो सर्जरी	कैंसर सर्जरी
यूरोलॉजी	प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी	पीडिएट्रीक सर्जरी	नेफ्रोलोजी

डायग्नोस्टिक विश्वस्तरीय मशीनों द्वारा जांच व निदान, MRI (1.5 T), CT-Scan (128 Slice), CD4 Count की सुविधा उपलब्ध, अल्ट्रासाउण्ड, इको कार्डियोग्राम, एलर्जी टेस्ट (Phadia 100), Hb-Vario (HPCL), ADVIAXP (CLIA), TB-PCR (Gene Xpert)

▸ मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर ▸ सी.सी.यू. आई.सी.यू. ▸ पी.आई.सी.यू. ▸ एन.आई.सी.सी.यू. ▸ एन.आई.सी.यू. ▸ बर्न आई.सी.यू. ▸ ब्लड बैंक

आमजन हेतु उपलब्ध सरकारी सुविधाएं
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना | RBSK राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम | राजस्थान एड्स कन्ट्रोल सोसायटी | परिवार नियोजन एवं जननी सुरक्षा योजना | डॉट्स टी.बी. एवं क्षय रोग

PIMS **पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, उमरड़ा, उदयपुर**
अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 | Phone : 0294-3010000
Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311–ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294–2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।